मन्त्रमहोदधौ मृत्युञ्जयपुटितेन सहितः व्यासमन्त्रः

बालः पवनदीर्घेन्दुयुक्तो झिण्टीशयुग्मलम्।

अत्रिर्व्यासायहृदयं मनुरष्टाक्षरो मतः॥ १०१॥

ब्रह्मानुष्टुम्मुनिश्छन्दो देवः सत्यवतीसुतः।

आद्य बीजं नमः शक्तिर्दीर्घाढ्येत्रादिनाङ्गकम्॥ १०२॥

व्याख्यामुद्रिकयालसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं

वामे जानुतले दधानमपरं हस्तं सुविद्यानिधिम्।

विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहाङ्गद्युतिं

पाराशर्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत्सिद्धये॥ १०३॥

जपेदष्टसहस्राणि पायसैर्होममाचरेत्।

पूर्वोक्तपीठे व्यासस्य पूर्वमङ्गानि पूजयेत्॥ १०४॥

प्राच्यादिषु यजेत्पैलं वैशम्पायनजैमिनी।

सुमन्तु कोणभागेषु श्रीशुकं रोमहर्षणम्॥ १०५॥

उग्रश्रवसमन्यांश्च मुनीन् सेन्द्रादिकायुधान्।

एवं सिद्धमनुर्मन्त्री कवित्वं शोभनाः प्रजाः॥ १०६॥

व्याख्यानशक्तिं कीर्तिं च लभते सम्पदां चयम्।

मृत्युञ्जयेन पुटितं यो व्यासस्य मनुं जपेत्॥ १०७॥

सर्वोपद्रवसंत्यक्तो लभते वाञ्छितं फलम्।

तारः शूलीवामकर्णबिन्दुयुक्तः ससर्गसः ॥ १०८॥

मृत्युञ्जयस्य मन्त्रोऽयं त्रिवर्णो मृत्युनाशनः ।

जप्तोऽयं केवलो नृणामिष्टसिद्धिं प्रयच्छति ।

किंपुनस्तेन पुटितो वेदव्यासमनूत्तमः ॥ १०९॥

॥ इति श्रीमन्महीधरविरचिते मन्त्रमहोदधौ सूर्य्यादि-लघुमृत्युञ्जयव्यासमन्त्रनिरूपणं नाम पञ्चदशस्तरङ्गः ॥ १५॥

व्यासमन्त्रमाह - **बाल** इति। बालो वःपवनदीर्घेन्दुयुतः यकाराकारबिन्दुयुतः व्याम्। जलं झिटीशयुग् वकारएकारयुतः वे।अत्रिर्दः। व्यासाय स्वरूपम्। हृदयं नमः। यथा-व्यां वेद-व्यासाय नम इति॥ १०१-१०२॥ विप्रव्रातवृतं ब्राह्मणसमूहपरिवेष्टितम्।पाथोरुहाङ्घ्रद्युतिं नीले-न्दीवरकान्तिम्॥ १०३॥ पूर्वोक्तपीठे धर्मादिके॥१०४॥ * ॥ १०५–१०७॥

मृत्युञ्जयमन्त्रमाह - तार इति। तार ॐ। वामकर्णबिन्दुयुतः ऊबिन्दुयुतः शूली जः जूम्। ससर्गः सः सः॥ १०८॥

केवलोऽप्ययं जप्तो नृणां मृत्युनाशनः। किंपुनस्तत्पुटितः। व्यासमन्त्रः। अस्य मन्त्रस्य कहोल-ऋषिः दैवीगायत्रीच्छन्दः मृत्युञ्जयो देवता जूं बीजं सः शक्तिः। दीर्घाढ्य सकारेण षडङ्गम्॥ १०९॥

॥इति श्रीमन्महीधरविरचितायां मन्त्रमहोदधिव्याख्यायां नौकायां सूर्य्यादिलघुमृत्युञ्जयव्यासमन्त्र निरूपणं नाम पञ्चदशस्तरङ्गः॥ १५॥

अब **व्यास मन्त्र का उद्धार** कहते हैं - बाल (व), दीर्घेन्दुयुत् पवन (यां) अर्थात् (व्यां), फिर झिण्टीश (ए) सहित जल (व) अर्थात् (वे), फिर अत्रि (द), फिर 'व्यासाय' पद, उसमें हृदय (नमः) जोड़ने से ८ अक्षरों का व्यास मन्त्र निष्पन्न होता है॥ १०१॥

विमर्श - इस **मन्त्र का स्वरूप** निम्न है - व्यां वेदव्यासाय नमः ॥ १०१॥

इस व्यास मन्त्र के ब्रह्मा ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, सत्यवती सुत व्यास देवता हैं, व्यां बीज तथा नमः शक्ति है। षड्दीर्घ सहित आद्य बीज से षडङ्गन्यास करना चाहिए॥ १०२॥

विमर्श - विनियोग - अस्य श्रीव्यासमन्त्रस्य ब्रह्मात्रृषिरनुष्टुप्छन्दः सत्यवतीसुतो देवता व्यां बीजं नमः शक्तिरात्मनोऽभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास - व्यां हृदयाय नमः, व्यीं शिरसे स्वाहा, व्यूं शिखायै वषट्, व्यैं कवचाय हुम्, व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्, व्यः अस्त्राय फट्॥ १०२॥

अब **व्यास देव का ध्यान** कहते हैं - व्याख्यान मुद्रा से जिनके करतल सुशोभित हैं, जो मनोहर योगपीठ पर आसीन हैं, वाम जानु पर अपना दूसरा हाथ रखे हुये जो विद्यानिधान विप्रसमुदायों से परिवेष्टित हैं, जिनका मुख मण्डल प्रसन्न है एवं जिनके शरीर की कान्ति नील वर्ण की है, ऐसे पुण्यात्मा पुण्य चरित्र पराशर के पुत्र भगवान् व्यास का सिद्धि प्राप्ति हेतु स्मरण करना चाहिए॥ १०३॥

इस मन्त्र का आठ हजार जप करना चाहिए। तदनन्तर खीर से उसका दशांश होम करना चाहिए।

पूर्वोक्त पीठ पर प्रथम व्यास के षडङ्गों की पूजा करनी चाहिए। फिर पूर्वादि दिशाओं में पैल, वैशम्पायन, जैमिनि और सुमन्तु का तथा कोणों में श्रीशुक, रोमहर्षण, उग्रश्रवस् और अन्य मुनीन्द्रों का, पुनः इन्द्रादि दश दिक्पालों का तथा उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करना चाहिए॥ १०४-१०६॥

इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक को सुन्दर कवित्व शक्ति, उत्तम सन्तान, व्याख्यान-शक्ति, कीर्ति एवं सम्पत्ति का खजाना प्राप्त होता हैं॥ १०६-१०७॥

विमर्श - पूजा विधि - सर्वप्रथम वृत्ताकार कर्णिका, अष्टदल तथा भूपुर सहित यन्त्र का निर्माण करना चाहिए। उसी पर भगवान् वेदव्यास का इस प्रकार पूजन करना चाहिए।

१०३ में वर्णित व्यास के स्वरूप का ध्यान कर मानसोपचारों से उनका पूजन कर

अर्घ्य स्थापित करे। फिर १५.९२ में कही गई विधि से पीठ देवताओं का, तदनन्तर धर्मादि-कों का पूजन कर पीठ मन्त्र से यन्त्र पर आसन देकर, मूल मन्त्र से उस पर मूर्ति की कल्पना कर ध्यान, आवाहन से पुष्पाञ्जलि समर्पण पर्यन्त उपचारों से भगवान् व्यास का पूजन कर आवरण पूजन की आज्ञा ले इस प्रकार आवरण पूजा प्रारम्भ करे।

पीठ देवताओं की पूजा :—मध्यमें-

ॐ मं मण्डूकाय नमः **ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः**

ॐ आं आधारशक्तये नमः **ॐ कूं कूर्माय नमः**

ॐ पृं पृथिव्यै नमः **ॐ क्षीं क्षीरसमुद्राय नमः**

ॐ श्वें श्वेतद्वीपाय नमः **ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः**

ॐ मं मणिमण्डलाय नमः **ॐ स्वं स्वर्णसिंहासनाय नमः**

पुनः पीठके चारों कोणोंमें क्रमशः आग्नेय कोणसे प्रारम्भ करें —

ॐ धं धर्माय नमः(आग्नेय) **ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः(नैऋति)**

ॐ वैं वैराग्याय नमः(वायव्य) **ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः(ईशान्य)**

पुनः पीठके चारों दिशाओंमें पूर्वदिशासे प्रारम्भ करें —

ॐ अं अधर्माय नमः(पूर्व) **ॐ अं अज्ञानाय नमः(दक्षिण)**

ॐ अं अवैराग्याय नमः(पश्चिम) **ॐ अं अनैश्वर्याय नमः(उत्तर)**

कर्णिका के आग्नेयादि कोणों में मध्य में तथा चतुर्दिक्षु षडङ्गपूजा इस प्रकार करनी चाहिए। यथा -

व्यां हृदयाय नमः आग्नेये, **व्यीं शिरसे स्वाहा, नैर्ऋत्ये,**

व्यूं शिखायै वषट्, वायव्ये, **व्यैं कवचाय हुम्, ऐशान्यै,**

व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्, मध्ये, व्यः अस्त्राय फट् चतुर्दिक्षु।

इसके बाद पूर्वादि चारों दिशाओं में पैल आदि की निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करनी चाहिए। यथा -

ॐ पैलाय नमः पूर्वे, ॐ वैशम्पायनाय नमः दक्षिणे,

ॐ जैमिन्यै नमः पश्चिमे, ॐ सुमन्तवे नमः उत्तरे,

इसके बाद आग्नेयादि चारों कोणों में श्रीशुकादि की पूजा करे। यथा -

ॐ श्रीशुकाय नमः, आग्नेये, ॐ श्रीरोमहर्षणाय नमः, नैर्ऋत्ये,

ॐ उग्रश्रवसे नमः, वायव्ये, ॐ अन्यमुनीन्द्रेभ्यो नमः, ऐशान्ये

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की। यथा -

ॐ लं इन्द्राय नमः, पूर्वे, ॐ रं अग्नये नमः, आग्नेये,

ॐ मं यमाय नमः, दक्षिणे, ॐ क्षं निर्ऋतये नमः, नैर्ऋत्ये,

ॐ वं वरुणाय नमः, पश्चिमे, ॐ यं वायवे नमः, वायव्ये

ॐ सं सोमाय नमः, उत्तरे, ॐ हं ईशानाय नमः, ऐशान्ये,

ॐ आं ब्रह्मणे नमः पूर्वेशानयोर्मध्ये,ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये

फिर भूपुर के बाहर पूर्वादि दिशाओं के क्रम से वज्रादि आयुधों की निम्नलिखित मन्त्रों से पूजा करनी चाहिए।

ॐ वं वज्राय नमः, ॐ शं शक्तये नमः, ॐ दं दण्डाय नमः, ॐ खं खड्गाय नमः,

ॐ पां पाशाय नमः, ॐ अं अंकुशाय नमः, ॐ गं गदायै नमः, ॐ शूं शूलाय नमः,

ॐ पं पद्माय नमः, ॐ चं चक्राय नमः।

इस प्रकार आवरण पूजा कर धूप दीपादि उपचारों से विधिवत् भगवान् वेदव्यास की पूजा करनी चाहिए ॥ १०४-१०७ ॥

अब **मृत्युञ्जय संपुटित व्यास मन्त्र की महिमा** कहते हैं -

जो व्यक्ति मृत्युञ्जय मन्त्र से संपुटित व्यास मन्त्र का जप करता है वह सभी उपद्रवों से मुक्त होकर वाञ्छित फल प्राप्त करता है ॥ १०७-१०८ ॥

विमर्श - मृत्युञ्जय पुटित व्यास मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है

ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूं ॐ ॥ १०७-१०८ ॥

मृत्युञ्जय मन्त्र का उद्धार - तार (ॐ), वामकर्ण (ऊकार) एवं बिन्दु अनुस्वार सहितः शूली (ज), इस प्रकार (जूं), इसके आगे विसर्ग सहित सकार (सः), यह तीन अक्षर का मृत्युनाशक मृत्युञ्जय मन्त्र है ॥ १०८-१०९ ॥

केवल इसका ही जप करने से मनुष्य इष्ट सिद्धि प्राप्त कर लेता है, फिर इससे संपुटित व्यास मन्त्र का जप किया जाय तो इसके फल के विषय में क्या कहना है ? ॥ १०९ ॥

विमर्श - मृत्युञ्जय मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है - *"ॐ जूं सः"* ॥ १०६ ॥

विनियोग - अस्य श्रीमृत्युञ्जयमन्त्रस्य कहोलऋषिर्देवीगायत्रीच्छन्दः मृत्युञ्जयो देवता जूं बीजं सः शक्तिरात्मनोऽभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

षडङ्गन्यास -

सां हृदयाय नमः, सीं शिरसे स्वाहा, सूं शिखायै वषट्,सैं कवचाय हुम्, सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, सः अस्त्राय फट् ।

ध्यान -

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं

मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत् पाणिं हिमांशुप्रभम्।

किरीटेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादि भूषोज्ज्वलं

कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत्॥

जिनके सूर्य, चन्द्र और अग्नि स्वरूप तीन नेत्र हैं, जिनका मुखमण्डल स्मित से युक्त है, जिनके शिरोभाग दो कमलों के मध्य स्थित हैं अर्थात् एक ऊर्ध्वमुख एवं उसके ऊपर विद्यमान दूसरा कमल अधोमुख रूप से विद्यमान हैं। जिन्होंने अपने हाथों में मुद्रा, पाश, मृग, अक्षमाला धारण किया है, जिनके शरीर की कान्ति चन्द्रमा के समान उज्ज्वल है, जिनका शरीर किरीट में जटित चन्द्र मण्डल से चूते हुए अमृतकणों से आप्लावित है और हारादि नाना प्रकार के भूषणों से उज्ज्वल है - ऐसे महामृत्युञ्जय पशुपति का ध्यान करना चाहिए जो अपनी कान्ति से विश्व को मोहित कर रहे हैं॥ १०८-१०६॥

॥इस प्रकार श्रीमन्महीधर विरचित मन्त्रमहोदधि के पञ्चदश तरङ्ग की महाकवि पं० राम-कुबेर मालवीय के द्वितीय आत्मज डॉ० सुधाकर मालवीय कृत 'अरित्र' नामक हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई॥ १५॥
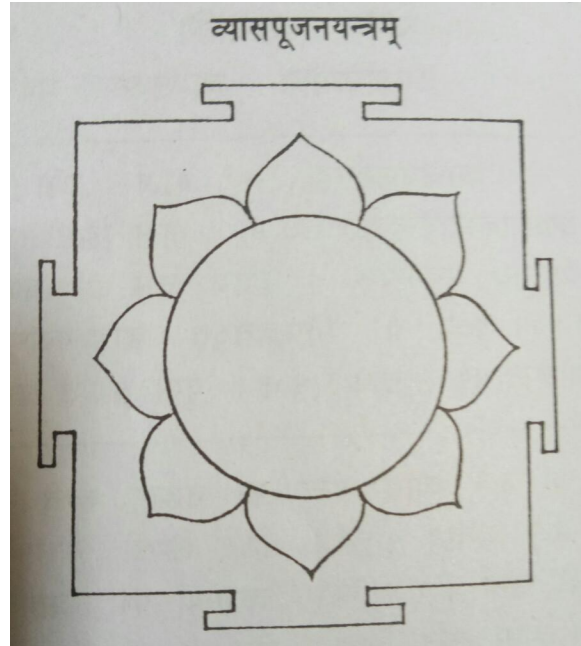
वेदव्यासमन्त्रप्रयोगविधिः (स्वामी श्रीशान्तिधर्मानन्द सरस्वती)

फलम्-कवित्वसिद्धिः, ग्रन्थलेखनसिद्धि, ज्ञानप्राप्तिश्च अनुष्ठानम्-48 दिन में 125000 पुरश्चरण 14 लाख + दशांशादि।

"ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूं ॐ" - मूलमन्त्रः।

अथास्य वेदव्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, सत्यवतीसुतो देवता, व्यां बींजं, नमः शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभिष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यास :-

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः - शिरसि, **ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः -** मुखे, **ॐ सत्यवतीसुत देवतायै नमः** हृदि, **ॐ व्यां बीजाय नमः-** गुह्ये, **ॐ नमः शक्तये नमः** पादयोः, **ॐ ॐ कीलकाय नमः** - नाभौ, **ॐ ममाभिष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः** - सर्वांगे।

अथ करादिन्यास :-

अथ बीजं	अथ हृदयादिन्यासः	अथ करन्यासः
ॐ व्यां	**हृदयाय नमः**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**
ॐ व्यीं	**शिरसे स्वाहा**	**तर्जनीभ्यां नमः ।**
ॐ व्यूं	**शिखायै वषट्**	**मध्यमाभ्यां नमः ।**
ॐ व्यैं	**कवचाय हुम्**	**अनामिकाभ्यां नमः ।**
ॐ व्यौं	**नेत्रत्रयाय वौषट्**	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।**
ॐ व्यः	**अस्त्राय फट्**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।**

अथ ध्यानम् :-

व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं,वामेजानुतले दधानमपरं हस्तेषु विद्यानिधिं।

विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहांगद्युतिं, पाराशर्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत्सिद्धये॥

(इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत्। ततः सर्वतोभद्रमण्डले धर्मादिपीठदेवताः संस्थाप्य)

"ॐ धर्मादिपीठदेवताभ्यो नमः" (इत्यनेन मन्त्रेण पूजयेत्)

(ततः यंत्रं/मूर्तिं वा ताम्रपात्रोपरि निधाय घृतेनाभ्यंज्य दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोध्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां कुर्यात्)

'ॐ ह्रीं आं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रीं हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः यन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः सन्तु। ॐ ह्रीं आं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रीं हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः यन्त्रस्य जीव इह स्थितो भवतु । सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणाः इहैवागत्यासीरन् यन्त्रे सुखं चिरं च तिष्ठन्तु स्वाहा।'

(इत्यनेन प्रकारेण प्रतिष्ठां कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन आवाहनासनपाद्यार्घ्याचमनस्नानवस्त्राभूषण-गन्धपुष्पान्तोपचारैः संपूज्य षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु चावरणपूजां कुर्यात्।

ततः षडंगानि पूजयेत्)

ॐ व्यां हृदयाय नमः, ॐ व्यीं शिरसे स्वाहा, ॐ व्यूं शिखायै वषट्, ॐ व्यैं कवचाय हुम्, ॐ व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ व्यः अस्त्राय फट्। ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य -

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनं॥' (इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा) 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' - इति प्रथमावरणं ततोऽष्टदले पूज्य-पूजकयोरन्तराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षिणावर्तेन प्राच्यादिचतुर्दिक्षु -

ॐ शल्याय नमः, शल्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। 1।

ॐ वैशम्पायनाय नमः, वैशम्पायनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। 2।

ॐ जैमिनये नमः, जैमिनिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । 3 ।

ॐ सुमन्ताय नमः,सुमन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । 4 ।(ततःआग्नेयादिचतुष्कोणेषु)

ॐ श्रीशुकाय नमः, शुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । 5 ।

ॐ उग्रश्रवसे नमः, उग्रश्रवः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । 6 ।

ॐ समन्याय नमः, समन्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । 7 ।

ॐ चिमनाय नमः, चिमनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । 8 ।

पूजयित्वा पूर्ववत्पुष्पांजलिं दद्यात्,इति द्वितीयावरणं। ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपदीपनैवेद्याचमन-ताम्बूलस्तवपाठनीराजनपुष्पांजलिप्रदक्षिणानमस्कारान्तोपचारैः संपूज्य क्षमायाचनां च कृत्वा जपं कुर्यात्। तत्र धूपादिषु विशेषः-

धूपं - **वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यतां ।**

ॐ व्यां सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय वेदव्यासाय धूपं समर्पयामि।

दीपं - **स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। स बाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यतां।**

ॐ व्यां सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय वेदव्यासाय दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं - **ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा** - इत्यनेन जलं दत्त्वा प्राणाहुतीन् दद्यात् ततः

ॐ व्यां वेदव्यासाय नमः अस्त्राय फट् - इति मन्त्रेण प्रोक्षयित्वा

ॐ जूं सः वौषट् - इति 7 वारं जप्त्वा अर्थमननं च कृत्वा जलेन प्रोक्षयित्वा

ॐ आं यं श्रौषट् - इत्यनेन मन्त्रेण 7 वारमधोमुखवामहस्तेन तालिकां कृत्वा

ॐ इं वं स्वाहा - इत्यनेन मन्त्रेण धेनुमुद्रां प्रदर्शयित्वा मूलमन्त्रं 7 वारं जप्त्वाऽर्थमननं कुर्यात् ततः अर्घ्यादित्रयं दद्यात्

ॐ अमृतपिधानमसि स्वाहा - पुनः जलं दद्यात् ।

ॐ व्यां सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय वेदव्यासाय नैवेद्यं निवेदयामि।

कृतपूजाया साद्गुण्यार्थे दक्षिणामपि दद्यात्। **हरिः ॐ तत्सत् । ब्रह्मार्पणमस्तु।**

अत्र ध्येयं :- अस्य पुरश्चरणं वाऽष्टसहस्रं वा जपः कृत्वा पायसान्नेन दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान्साधयेत्। तथाहि -

“जपेदष्टसहस्राणि पायसैर्होममाचरेत् ।एवं सिद्धमनुर्मन्त्री कवित्वं शोभनाः प्रजाः ॥

व्याख्यानशक्तिं कीर्तिं च लभते संपदां च यः। मृत्युंजयेन पुटितं यो व्यासस्य मनुं जपेत्॥

सर्वोपद्रवसंत्यक्तो लभते वांछितं फलं। मृत्युंजयस्य मन्त्रोऽयं त्रिवर्णो मृत्युनाशनः॥

जप्तोऽयं केवलो नृणामिष्टसिद्धिं प्रयच्छति। किं पुनस्तेन पुटितो वेदव्यासमनूत्तमः”इत्यों शम्॥

Computerized by :- Swami Brahmavidyananda,

Shri Malayalaswami Ashram; Solapur.